मूर्तिपूजा का वैज्ञानिक आधार - प्रश्नोत्तरी

उपरोक्त संदर्भ में श्री बलदेव राज जी की प्रश्नावली :-

१ मूर्तिपूजा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पढा, मेरे विचार से ऐसा लगता है, कि लेखक भारतीय संस्कृति और धार्मिक इतिहास से बिलकुल अनभिज्ञ हैं।

२ भारत का इतिहास साक्षी है, कि अपने ढंग से मूर्तिपूजा बौद्ध और जैन सम्प्रदायों से २००० साल से आरम्भ हुई ।

३ वे ईश्वर की सत्ता नही मानते, इसीलिए उसके स्थान पर बुद्ध/तीर्थकरों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे ।

४ इनकी देखा-देखी हिन्दू सम्प्रदाय वादियों ने रामकृष्ण, विष्णु आदि की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे ।

५ भारत देश का धार्मिक इतिहास १४५ अरब साल पुराना है । क्या किसी ऋषि को यह बात (अगर वैज्ञानिक होती) नहीं सूझी ।

६ अगर सूझी होती, तो क्यों मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, उपनिषदों और अन्य धार्मिक ग्रन्थों में इसका जिकर नहीं है ।

७ वेद वाणी में जो ईश्वरीय वाणी है और सारे हिन्दू सम्प्रदाय स्वत: प्रमाण मानते हैं । इसका जिकर नहीं । हां ईश्वर के स्थान पर अन्य का पूजना पाप कहा गया है ।

८ हिन्दू जाति की जो दुर्दशा आज दिखाई देती है, उनका एक कारण मूर्तिपूजा है । जड़ की पूजा करते-करते बुद्धि भी जड़ हो गई है । अपने श्रेष्ठ, ग्रन्थो का अध्ययन बन्द हो गया है ।

९ ईश्वर प्राप्ति का विषय मन और आत्मा का है और वह भी वहीं हो सकता है, जहां यह मत हो, कि मूर्ति में मन और आत्मा नहीं है । इस कारण मूर्तिपूजा वैज्ञानिक न होकर अवैज्ञानिक है और वेद के विरुद्ध है ।

१० मेरा विचार यही है, कि हिन्दू जाति को बचाने, हिन्दू धर्म को पवित्र रखने तथा ईश्वर प्राप्ति के लिए मूर्तिपूजा बाधक है । योगाभ्यास ही एक मात्र साधन है ।

बलदेव राज (१७१९/१४३बी, चण्डीगढ़)

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर :-

सर्वप्रथम तो यह समझना आवश्यक है, कि "प्रतीक" कहते किसे हैं ?

प्रतीक या चिन्ह किसी बड़ी वस्तु का छोटा प्रतिरूप होता है और हम उस प्रतिरूप को यह मान लेते हैं, कि उसमें वे सभी गुण मौजूद हैं, जो कि मुख्य वस्तु में हैं; जैसे कि **"राष्ट्र ध्वज" "राष्ट्र"** का प्रतीक है । **"गौ"** प्रतीक है **"पृथ्वी"** का अर्थात् उस भूमि का, जिस पर उसके नागरिक निवास करते हैं अर्थात् **"मातृभूमि"** का प्रतीक है तथा **"गंगा नदी" "आकाशगंगा"** का प्रतीक है । हमारी आकाशगंगा में एक खरब से भी अधिक सूर्य हैं और हम पृथ्वीवासियों के लिए हमारे सूर्य के अतिरिक्त आकाशगंगा अनन्त शक्ति का स्रोत है । आदरणीय पाठकगण ! इस प्रकार की परिभाषाओं से कृपया चौंके नहीं। यह विज्ञान का युग है । धर्म को विज्ञान के चश्मे से देखने से ही कट्टरता एवम् अन्धविश्वास दूर हो सकेंगे । इसका विस्तार से वर्णन लेखक ने "हिन्दू धर्म का प्रादुर्भाव - एक समग्र दृष्टि" नामक लेख में किया है ।

उत्तर बहुत ही संक्षेप में देने का प्रयास किया जायगा, ताकि अधिक लम्बा और बोझिल न हो जाय ।

धर्म ग्रन्थों में प्रतीकों का वर्णन :-

१. वैश्वानर के स्वरूप का वर्णन (छान्दोग्य उपनिषद - V.18.1-2) :-

स्वर्ग सिर है; सूर्य आँखें हैं; वायु प्राण हैं; आकाश शरीर है; जल उसके गुर्दे हैं; पृथ्वी पैर हैं; यज्ञ कुंड छाती है; पवित्र दूब बाल हैं; गारपत्य अग्नि हृदय हैं, आदि आदि ।

२. विष्णु का वर्णन (कठोपनिषद् - I.3.9) :-

जिसके मन की लगाम को विज्ञान रूपी बुद्धि नियन्त्रण में रखती है, वह साधक मोक्ष को प्राप्त कर लेता है, यही **"विष्णु"** का परम पद है।

३. आत्म-पुरुष का वर्णन (कठोपनिषद् - II.IV.12-13) :-

अंगुष्ठ मात्र: पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति.....ज्योतिरिवा धूमक: अर्थात् "अँगूठे" के आकार का परमात्मा हृदय में स्थित है, जो बिना धुयें का ज्योति स्वरूप है ।

४. सूर्य का आत्म-स्वरूप वर्णन (ऋक् वेद - I.115.1) :-

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" अर्थात् सूर्य चल एवम् अचल सभी का आत्मा है ।

५. रामचरित मानस :-

(अ) यह महाकाव्य तो प्रतीकों, रूपकों, उपमाओं से भरा पड़ा है । आरम्भ से लेकर अन्त तक इसमें प्रतीकों की भरमार है ।

"भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ" (प्रथम पृष्ठ-बालकाण्ड - मंगलाचरण श्लोक-२)

अर्थ :- श्रद्धा और विश्वास के रूप अर्थात् प्रतीक भवानी और शंकर हैं ।

नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति । माँगि माँगि आयसु करत, राज काज बहु भाँति ।। (अयोध्याकाण्ड दो० ३२५)

अर्थ :- भरत जी श्री राम जी की पादुकाओं को **"राम जी"** का प्रतीक मानकर नित्य पूजन करते हैं और आज्ञा माँग माँग कर राज्य का कार्य करते हैं ।

सगुण उपासक परहित, निरत नीति दृढ़ प्रेम । ते नर प्रान समान मम, जिन्ह के द्विज पद प्रेम ।। (सुन्दरकाण्ड दो० ४८)

इस दोहे में सगुण उपासना को श्रेष्ठ बतलाया गया है ।

(ब) पुराण :- पुराणों का लेखन तो अनेक देव प्रतीकों को आधार बनाकर अनेक शिक्षाप्रद कथाओं के रूप में हुआ है । पुराण उपनिषिदिक ज्ञान का सरलीकृत रूप है । श्रीमद् भागवत पुराण तो मानो प्रतीकोपासना का भण्डार ही है।

६. सगुण उपासना का उपदेश :- (भगवद्गीता में जो महाभारत का ही अंश है ।)

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते । श्रद्धया परयोपासते मे युक्ततमा मता : ।। (गीता - १२/२)

अर्थ :- श्री भगवान बोले - मुझमें मन को एकाग्र करके निरन्तर मेरे भजन ध्यान में लगे हुए, जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त होकर मुझ सगुणरूप परमेश्वर को भजते हैं, वे मुझको योगियों में अति उत्तम योगी मान्य हैं । "सगुण" शब्द का एक अर्थ यह भी है, कि परमात्मा के गुणों का चिन्तन-मनन किया जाना चाहिए । यह भी ठीक है ।

मूर्ति पूजा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पढ़ा और मेरे विचार में ऐसा लगता है कि लेखक भारतीय संस्कृति और धार्मिक इतिहास से बिलकुल अनभिज्ञ है।

भारत का इतिहास साक्षी है कि अपने ढंग में मूर्तिपूजा बौध और जैन सम्प्रदायों से 2000 साल से आरम्भ हुई।

ईश्वर की सत्ता को मानते नहीं इसीलिए उसके स्थान बुद्ध/ तीर्थकरों की मूर्तियां बना कर पूजने लगे।

इनकी देखा देखी हिन्दु सम्प्रदाय वादियों ने रामकृष्ण, विष्णु आदि की मूर्तियां बना कर पूजने लगे।

भारत देश का धार्मिक इतिहास 145 अरब साल पुराना है। क्या किसी ऋषि को यह बात (अगर वैज्ञानिक होती) नहीं सुझी।

अगर सुझी होती तो क्यों मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, उपनिषदों और अन्य धार्मिक ग्रन्थों में इसका जिकर नहीं है।

वेद वाणी में जो ईश्वरीय वाणी है और सारे हिन्दु सम्प्रदाय स्वतः प्रमाण मानते है। इसका जिकर नहीं। हां ईश्वर के स्थान पर अन्य का पूजना पाप कहा गया है।

हिन्दु जाति की दुर्दशा आज दिखाई देती है उनका एक कारण मूर्ति पूजा है। जड़ की पूजा करते-करते बुद्धि भी जड़ हो गई है। अपने श्रेष्ठ, ग्रन्थों का अध्ययन बन्द हो गया है।

ईश्वर प्राप्ति का विषय मन और आत्मा का है और वह भी वहीं हो सकता है जहां यह मत हो मूर्ति में मन और आत्मा नहीं। इस कारण मूर्ति पूजा वैज्ञानिक न होकर अविज्ञानिक है और वेद के विरूद्ध है।

मेरा विचार यही है कि हिन्दु जाति को बचाने, हिन्दु धर्म को पवित्र रखने तथा ईश्वर प्राप्ति के लिए मूर्ति पूजा बाधक है। योगाभ्यास ही एक मात्र साधन है।

- बलदेव राज 1719/1,43 बी, चण्डीगढ़

७. मनुस्मृति :- यह दण्ड विधान की पुस्तक है । इसमें धर्म के दस लक्षणों और सभी वर्णों के क्या कर्त्तव्य हैं, उनका वर्णन है और उन पर आचरण न करने पर दण्ड व्यवस्था है । इस पुस्तक में मूर्तिपूजा का उल्लेख करने का कोई औचित्य ही नहीं है ।

यद्यपि वैदिक काल के आरम्भ से ही प्रतीकों का बीजरूप से सभी ग्रन्थों में वर्णन आया है, जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है । फिर भी द्वापर में सगुणोपासना की प्रथा अधिक खुलकर समाज में प्रचलित होनी आरम्भ हुई, जैसा कि गीता के उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है । यद्यपि बौद्ध धर्म जैन धर्मावलम्बी प्रतिक्रियावादी तथा निरीश्वरवादी धर्म थे, तो भी उन्होंने मूर्तिपूजा का विधान बिम्बों में ही गीता लगता है ।

शुद्ध वैदिक काल में प्रतीक तो थे, लेकिन तब तक उनको कलाकृतियों के रूप में विकसित नहीं किया गया था । समय की मांग हुई । जनता भौतिकता की ओर अधिक बढ़ती गयी, अतएव ठोस और सुन्दर कलाकृतियों के रूप में राम, कृष्ण, हनुमान, विष्णु आदि तमाम देवताओं की मूर्तियों का विकास किया गया, ताकि जनसाधारण की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती रहे तथा साधक ईश्वर प्राप्ति के अन्तिम लक्ष्य की ओर भी बढ़ता जाय। धन के अभाव मे लक्ष्मी की उपसना, संकट में फँसे व्यक्ति को हनुमान की पूजा-अर्चना तथा बुद्धि विकास हेतु श्री गणेश का पूजन व ध्यान की विधियों का वैज्ञानिक रूप से विकास किया गया । यह बहुदेवतावाद नहीं है, मात्र समझाने वाले पण्डितों का अभाव ही इस प्रकार की अज्ञानता का कारण है । इस सम्बन्ध में कृपया लेखक द्वारा लिखित ''प्रतीक विज्ञान'' लेख का अवलोकन करें ।

ये सभी देवता चुम्बकीय विद्युत तरंगों के अलग-अलग आवृत्तियों (Frequencies) पर स्थित शक्तियों के मानवीकृत रूप हैं, जो जनसाधारण को ''क'' से कबूतर तथा ''ख'' से खरगोश के स्तर से लेकर कम्पयूटर चलाने एवम् उच्चत्तम गणित के सवालों को हल करने तक में समर्थ हो सके ।

जिस प्रकार X-ray (क्ष-किरण) जिसकी तरंग दीर्घता (Wave length) 10^{-8} c.m. अर्थात् स्पन्दन प्रति सेकंड = 3×10^{18} है तथा वह मानव की सेवा में निरन्तर रत रहती है, यह चुम्बकीय विद्युत तरंग का ही एक अंश है । उसी प्रकार LASER (लेज़र) भी चुम्बकीय विद्युत तरंग की अति उच्च आवृत्तियों का स्पन्दन है । इन्हें हम चाहें, तो प्राचीन भाषा में X-ray देवता तथा लेज़र देवता भी कह सकते हैं, क्योंकि ये सब भी जल, वायु, अग्नि की भाँति ही हमारी निष्काम सेवा करते हैं और बदले में हमसे कुछ नहीं लेते ।

कुछ देवताओं के रंग विधान एवम् शक्ति स्पन्दन निम्न पंक्तियों में दिए जा रहे हैं :-

	नाम	रंग	स्पन्दन प्रति सेकंड (Frequency)	तरंग दीर्घता (Wave Length)
१.	ब्रह्म	श्याम	$790 - 680 \times 10^{12}$	3800 - 4300 Å
२.	आकाश तत्व (ब्रह्म का चित्त)	नील	$680 - 670 \times 10^{12}$	4300 - 4500 Å
३.	विष्णु	नीला	$670 - 610 \times 10^{12}$	4500 - 4900 Å
४.	गणेश	हरा	$610 - 540 \times 10^{12}$	4900 - 5500 Å
५.	देवी	पीला	$540 - 510 \times 10^{12}$	5500 - 5900 Å
६.	हनुमान	नारंगी	$510 - 460 \times 10^{12}$	5900 - 6500 Å
७.	भैरव	लाल	$460 - 390 \times 10^{12}$	6500 - 7600 Å

उपरोक्त आवृत्तियों को मानव काबू कर ले, तो इन शक्तियों से अनेक कार्य साधे जा सकते हैं । यही था साधना का उद्देश्य, पर अब यह सब ज्ञान लुप्त हो चुका है । बचा रह गया है अंधविश्वास और कथाएं ।

स्वतन्त्रता के फौरन बाद यदि भारत सरकार संस्कृत तथा विज्ञान कम से कम बारह कक्षा तक अनिवार्य कर देती, तो भारत की विवेक शक्ति कुछ और ही होती । इस सम्बन्ध में लेखक द्वारा ''सम्प्रदायवाद के मूल कारण और समाधान'' लेख को देखने की कृपा करें ।

यह सत्य है, कि मूर्ति स्वयम् भगवान नहीं है, वह ध्यान एकाग्र करने का सहारा है और ध्यान के एकाग्र होने पर मूर्ति शक्तिमान हो उठती है । एक बार मूर्ति पर ध्यान टिकाना सीख लिया जाय, तो फिर देखिए, मूर्ति साक्षात बात भी करेगी और चलेगी भी । श्री रामकृष्ण परमहंस जी काली देवी से साक्षात बातचीत किया करते थे, यह बात जग प्रसिद्ध है । श्री बलदेव राज जी का यह उत्तम विचार है, कि योगाभ्यास ही ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र साधन है, तो यहाँ पर योगाभ्यास की बात ही की जा रही है । योगाभ्यास का अन्तिम लक्ष्य ध्यान साधना है और ध्यान लगाने में मूर्ति सहायक है । इसी कला को तो हम सबको सीखना है, इसी से सब का कल्याण होगा । इस विचार पर हम सब एकमत हों और फिर विरोधियों का सामना करें । देश में मत-मतान्तर के कारण हिन्दू धर्म पहले ही अनेक टुकड़ों में बँटा हुआ है । आइए ! हम सब देश, धर्म एवम् संस्कृति की मिलजुल कर रक्षा करें ।

यह सत्य है, कि तत्कालीन पण्डितों ने मूर्ति पूजा की घोर विकृति कर डाली थी, अर्थ के अनर्थ कर दिए थे । देश को बहुत हानि हुई । परन्तु दोष मूर्तिपूजा के सिद्धान्त में नहीं है, अपितु तत्कालीन पण्डितों की बुद्धि का था । **हिन्दू-धर्म एवम् संस्कृति के तीन आधार हैं :- १. साहित्य २. कला एवम् ३. विज्ञान। यह बात ध्यान से समझने की है, कि जब-जब देश ने विज्ञान पक्ष को भुलाया है, तब-तब हिन्दू धर्म को गहरा आघात लगा है, जिसकी टीस सदियों तक अनुभव की गयी;**

विज्ञान की समझ की कमी के कारण अन्धविश्वास, कट्टरता एवम् दुराग्रह फैलता है । आज नयी पीढ़ी जो विज्ञान की पीढी होगी, विज्ञान के माध्यम से ही धर्म को ग्रहण करेगी ।

स्वा० दयानन्द जी ने तत्कालीन जनता को अत्याचारी पण्डितों से छुटकारा दिलाने हेतु मूर्तिपूजा का खण्डन कर दिया था और ''यज्ञ'' को परमात्मा का सुलभ ''प्रतीक'' बतलाकर उपासना करने का उपदेश दिया था । वह समयानुकूल बुद्धिमत्ता थी । वे युग पुरुष और समाज सुधारक थे । पुरानी बातों पर विवेकहीन आग्रह विज्ञान के युग में उचित नहीं है । **एक ग्राम यूरेनियम से दिल्ली एवम् चण्डीगढ़ जैसे महानगर मिनटों में पूर्ण रूप से भस्म हो सकते हैं; अतएव यह कहना, कि ''मूर्ति'' जड़ है, ऐसी सोच विज्ञान की जानकारी न होने के कारण है । परमात्मा की शक्ति सर्वत्र व्याप्त है।**

आर्य समाज बुद्धिजीवियों का समाज रहा है और अभी भी है, परन्तु आज वे समय से पीछे छूटते जा रहे हैं ।

अन्त में टीकाकार महोदय का बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिनके कारण कदाचित् सैंकड़ों अन्य शंकालुओं को भी लाभ होने की सम्भावना हो गयी है, क्योंकि उनके द्वारा उपरोक्त प्रश्न उठाने से देश व्यापी चर्चा का जन्म हुआ है और इस प्रकार अज्ञान का अंधकार भी दूर होने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है ।

शुभम् भूयात् !

इंजी०/डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता (तन्मय)
'गायत्री धाम', बी-३४०, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली-११००३४. दूरभाष : ७१८४१४५

नोट : मेरे उपरोक्त विचारों से यदि किन्हीं सज्जन के मन को ठेस लगी हो, तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ ।

७. मनुस्मृति :- यह दण्ड विधान की पुस्तक है । इसमें धर्म के दस लक्षणों और सभी वर्णों के क्या कर्त्तव्य हैं, उनका वर्णन है और उन पर आचरण न करने पर दण्ड व्यवस्था है । इस पुस्तक में मूर्तिपूजा का उल्लेख करने का कोई औचित्य ही नहीं है ।

यद्यपि वैदिक काल के आरम्भ से ही प्रतीकों का बीजरूप से सभी ग्रन्थों में वर्णन आया है, जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है । फिर भी द्वापर में सगुणोपासना की प्रथा अधिक खुलकर समाज में प्रचलित होनी आरम्भ हुई, जैसा कि गीता के उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है । भागवत पुराण से भी यही सिद्ध होता है।

यद्यपि बौद्ध एवम् जैन धर्मावलम्बी, प्रतिक्रियावादी तथा निरीश्वरवादी धर्म थे, तो भी उन्होंने मूर्तिपूजा का विधान हिन्दुओं से ही सीखा लगता है।

शुद्ध वैदिक काल में प्रतीक तो थे, लेकिन तब तक उनको कलाकृतियों के रूप में विकसित नहीं किया गया था । समय की माँग हुई । जनता भौतिकता की ओर अधिक बढ़ती गयी, अतएव ठोस और सुन्दर कलाकृतियों के रूप में राम, कृष्ण, हनुमान, विष्णु आदि तमाम देवताओं की मूर्तियों का विकास किया गया, ताकि जनसाधारण की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती रहे तथा साधक ईश्वर प्राप्ति के अन्तिम लक्ष्य की ओर भी बढ़ता जाय। धन के अभाव में लक्ष्मी की उपसना, संकट में फँसे व्यक्ति को हनुमान की पूजा-अर्चना तथा बुद्धि विकास हेतु श्री गणेश का पूजन व ध्यान की विधियों का वैज्ञानिक रूप से विकास किया गया । यह बहुदेवतावाद नहीं है, मात्र समझाने वाले पण्डितों का अभाव ही इस प्रकार की अज्ञानता का कारण है । इस सम्बन्ध में कृपया लेखक द्वारा लिखित "प्रतीक विज्ञान" लेख का अवलोकन करें ।

ये सभी देवता चुम्बकीय विद्युत तरंगों के अलग-अलग आवृत्तियों (Frequencies) पर स्थित शक्तियों के मानवीकृत रूप हैं, जो जनसाधारण को "क" से कबूतर तथा "ख" से खरगोश के स्तर से लेकर कम्प्यूटर चलाने एवम् उच्चत्तम गणित के सवालों को हल करने तक में समर्थ हो सके ।

जिस प्रकार X-ray (क्ष-किरण) जिसकी तरंग दीर्घता (Wave length) 10^{-8} c.m. अर्थात् स्पन्दन प्रति सेकंड = 3×10^{18} है तथा वह मानव की सेवा में निरन्तर रत रहती है, यह चुम्बकीय विद्युत तरंग का ही एक अंश है । उसी प्रकार LASER (लेज़र) भी चुम्बकीय विद्युत तरंग की अति उच्च आवृतियों का स्पन्दन है । इन्हें हम चाहें, तो प्राचीन भाषा में X-ray देवता तथा लेज़र देवता भी कह सकते हैं, क्योंकि ये सब भी जल, वायु, अग्नि की भाँति ही हमारी निष्काम सेवा करते हैं और बदले में हमसे कुछ नहीं लेते ।

कुछ देवताओं के रंग विधान एवम् शक्ति स्पन्दन निम्न पंक्तियों में दिए जा रहे हैं :-

	नाम	रंग	स्पन्दन प्रति सेकंड (Frequency)	तरंग दीर्घता (Wave Length)
१.	ब्रह्म	श्याम	$790 - 680 \times 10^{12}$	3800 - 4300 Å
२.	आकाश तत्व (ब्रह्म का चित्त)	नील	$680 - 670 \times 10^{12}$	4300 - 4500 Å
३.	विष्णु	नीला	$670 - 610 \times 10^{12}$	4500 - 4900 Å
४.	गणेश	हरा	$610 - 540 \times 10^{12}$	4900 - 5500 Å
५.	देवी	पीला	$540 - 510 \times 10^{12}$	5500 - 5900 Å
६.	हनुमान	नारंगी	$510 - 460 \times 10^{12}$	5900 - 6500 Å
७.	भैरव	लाल	$460 - 390 \times 10^{12}$	6500 - 7600 Å

उपरोक्त आवृत्तियों को मानव काबू कर ले, तो इन शक्तियों से अनेक कार्य साधे जा सकते हैं । यही था साधना का उद्देश्य, पर अब यह सब ज्ञान लुप्त हो चुका है । बचा रह गया है अंधविश्वास और कथाएं ।

स्वतन्त्रता के फौरन बाद यदि भारत सरकार संस्कृत तथा विज्ञान कम से कम बारह कक्षा तक अनिवार्य कर देती, तो भारत की विवेक शक्ति कुछ और ही होती । इस सम्बन्ध में लेखक द्वारा "सम्प्रदायवाद के मूल कारण और समाधान" लेख को देखने की कृपा करें ।

यह सत्य है, कि मूर्ति स्वयम् भगवान नहीं है, वह ध्यान एकाग्र करने का सहारा है और ध्यान के एकाग्र होने पर मूर्ति शक्तिमान हो उठती है । एक बार मूर्ति पर ध्यान टिकाना सीख लिया जाय, तो फिर देखिए, मूर्ति साक्षात बात भी करेगी और चलेगी भी । श्री रामकृष्ण परमहंस जी काली देवी से साक्षात बातचीत किया करते थे, यह बात जग प्रसिद्ध है । श्री बलदेव राज जी का यह उत्तम विचार है, कि योगाभ्यास ही ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र साधन है, तो यहाँ पर योगाभ्यास की बात ही की जा रही है । योगाभ्यास का अन्तिम लक्ष्य ध्यान साधना है और ध्यान लगाने में मूर्ति सहायक है । इसी कला को तो हम सबको सीखना है, इसी से सब का कल्याण होगा । इस विचार पर हम सब एकमत हों और फिर विरोधियों का सामना करें । देश में मत-मतान्तर के कारण हिन्दू धर्म पहले ही अनेक टुकड़ों में बँटा हुआ है । आइए ! हम सब देश, धर्म एवम् संस्कृति की मिलजुल कर रक्षा करें ।

यह सत्य है, कि तत्कालीन पण्डितों ने मूर्ति पूजा की घोर विकृति कर डाली थी, अर्थ के अनर्थ कर दिए थे । देश को बहुत हानि हुई । परन्तु दोष मूर्तिपूजा के सिद्धान्त में नहीं है, अपितु तत्कालीन पण्डितों की बुद्धि का था । **हिन्दू-धर्म एवम् संस्कृति के तीन आधार हैं :- १. साहित्य २. कला एवम् ३. विज्ञान। यह बात ध्यान से समझने की है, कि जब-जब देश ने विज्ञान पक्ष को भुलाया है, तब-तब हिन्दू धर्म को गहरा आघात लगा है, जिसकी टीस सदियों तक अनुभव की गयी;**

विज्ञान की समझ की कमी के कारण अन्धविश्वास, कट्टरता एवम् दुराग्रह फैलता है । आज नयी पीढ़ी जो विज्ञान की पीढ़ी होगी, विज्ञान के माध्यम से ही धर्म को ग्रहण करेगी ।

स्वा० दयानन्द जी ने तत्कालीन जनता को अत्याचारी पण्डितों से छुटकारा दिलाने हेतु मूर्तिपूजा का खण्डन कर दिया था और "यज्ञ" को परमात्मा का सुलभ "प्रतीक" बतलाकर उपासना करने का उपदेश दिया था । वह समयानुकूल बुद्धिमत्ता थी । वे युग पुरुष और समाज सुधारक थे । पुरानी बातों पर विवेकहीन आग्रह विज्ञान के युग में उचित नहीं है । **एक ग्राम यूरेनियम से दिल्ली एवम् चण्डीगढ़ जैसे महानगर मिनटों में पूर्ण रूप से भस्म हो सकते हैं; अतएव यह कहना, कि "मूर्ति" जड़ है, ऐसी सोच विज्ञान की जानकारी न होने के कारण है । परमात्मा की शक्ति सर्वत्र व्याप्त है।**

आर्य समाज बुद्धिजीवियों का समाज रहा है और अभी भी है, परन्तु आज वे समय से पीछे छूटते जा रहे हैं ।

अन्त में टीकाकार महोदय का बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिनके कारण कदाचित् सैंकड़ों अन्य शंकालुओं को भी लाभ होने की सम्भावना हो गयी है, क्योंकि उनके द्वारा उपरोक्त प्रश्न उठाने से देश व्यापी चर्चा का जन्म हुआ है और इस प्रकार अज्ञान का अंधकार भी दूर होने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है ।

शुभम् भूयात् !

इंजी०/डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता (तन्मय)
'गायत्री धाम', बी-३४०, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली-११००३४. दूरभाष : ७१८४१४५

नोट : मेरे उपरोक्त विचारों से यदि किन्हीं सज्जन के मन को ठेस लगी हो, तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ ।